प्रथम अध्याय

भूमिका

अध्याय–1

भूमिका

1.0.0 प्रस्तावना

शिक्षण प्रक्रिया द्वारा शिक्षार्थी के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जाता है, यह कार्य किसी भी शिक्षित व्यक्ति द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है, परंतु यदि हम चाहते हैं कि हमारा बालक कुछ सीखे, अपने अनुभवों को विस्तृत करें और मानव जाति के अनुभवों द्वारा अपने जीवन को सफल बनाये तो हमें विशेष प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता पड़ेगी। विशेष प्रशिक्षित अध्यापकों से हमारा तात्पर्य उन अध्यापकों से है जो शिक्षा प्रदान करने की उत्तम एवं नवीन विधियों से परिचित हो तथा शिक्षण कला से पूर्ण रूप से अवगत हो।

आजकल देश में प्रशिक्षित शिक्षकों की बहुत आवश्यकता है। छात्र शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिये कई संस्थाऐं खोली गई हैं। इनमें से कुछ सरकारी तथा कुछ सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थाऐं हैं। इन संस्थाओं द्वारा स्नातक तथा स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों को बी.एड. प्रशिक्षण दिया जाता है। इस उपाधि के लिये निर्दिष्ट पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक भाग में पाँच से छः प्रमुख प्रश्न–पत्र रखे जाते हैं। एन.सी.टी.ई. (N.C.T.E.) प्रारूप के अनुसार पाठ्यक्रम में शिक्षा सिद्धांत शिक्षा मनोविज्ञान, विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विभिन्न विद्यालयीन विषयों के लिये शिक्षण विधियों, शिक्षा का इतिहास एवं समस्याऐं तथा एक वैकल्पिक विषय से संबंधित प्रश्न–पत्रों को स्थान दिया जाता है। इनके अतिरिक्त प्रायः 30 से लेकर 60 शिक्षण पाठों का अभ्यास भावी

अध्यापक/अध्यापिकाओं को शिक्षण अभ्यास के दौरान या इन्टर्नशिप या ब्लॉक टीचिंग के द्वारा करना होता है। 20 प्रतिशत समय को सैद्धांतिक पक्ष के लिये तथा 20 प्रतिशत सामुदायिक एवं अन्य व्यावहारिक कार्यो के लिये निर्धारित करते हुए शेष 60 प्रतिशत समयावधि की विषयवस्तु केन्द्रित शिक्षण विधि के साथ कक्षा शिक्षण और संबंधित प्राथमिक कार्य आदि के लिये आवंटित किया जाता है। वास्तविक स्थिति में इसके विपरीत प्रायः सैद्धांतिक पक्ष के लिये ही अधिकांश समय का उपयोग किया जाता है और शेष 30 से 40 प्रतिशत समयावधि में अन्य सभी कार्य किसी तरह से संपूर्ण करने के लिये प्रयत्न किये जाते हैं। इस प्रकार एन.सी.टी.ई. ने किस प्रकार का आदर्श पाठ्यक्रम रखा है वह निम्न प्रकार है –

1.1.0 राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई.) के अनुसार शिक्षा शिक्षण के अंतर्गत बी.एड. का पाठ्यक्रम

एन.सी.टी.ई.–2009 के अनुसार शिक्षा शिक्षण के अंतर्गत बी.एड. का पाठ्यक्रम निम्नबिंदुओं के आधार पर वर्णन किया गया है

1. शिक्षा का मूल आधार
2. पाठ्यक्रम और शिक्षा शास्त्र
3. स्कूल इन्टर्नशिप (School Internship)

1.1.1 शिक्षा का मूल आधार

इसमें निम्नबिंदुओं का समावेश होता है –

1. शिक्षार्थी अध्ययन
2. समकालीन अध्ययन
3. शैक्षिक अभ्यास

1. शिक्षार्थी अध्ययन

इस में बाल्यावस्था, बालक एवं किशोरावस्था के विकास और अधिगम प्रक्रिया के पद्धति का सामान्य अभ्यास के प्रति है। जिसमें शिक्षकों की जरूरत बालकों की वय के अनुसार विविध बालकों की अध्ययन क्षमता को जानने की है। जो क्षमता सामाजिक, आर्थिक और संस्कृति के संदर्भ में हो सकती है। जिसमें मनोवैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर बालकों के विकास को देखना है। शिक्षकों के लिये समान दृष्टिकोण बालक एवं किशोरों के प्रति होना अति आवश्यक है। इसके अंतर्गत विकास की संरचना और मनोवैज्ञानिक नियम और बच्चों के वृद्धि एवं विकास को सामाजिक एवं राजकीय दृष्टिकोण से देखना है।

यह पाठ्यक्रम से अनुशासन का मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र और समाज के खयालों को समझना है। बच्चों के निरीक्षण, प्रकृति एवं सामाजिक घटना को समझना है। जिससे बच्चे सीखते हैं और विचार करते हैं।

मुद्दे :

- बच्चों और किशोरावस्था के विकास की विश्लेषणात्मक थ्योरी।
- सामाजिकरण के संदर्भ की प्रक्रिया।
- सामाजिक एवं सांवेगिक विकास।
- स्व और पहचान।
- ज्ञानात्मक और अधिगम।
- शिक्षण के अंतर्गत स्कूल और शारीरिक स्वास्थ्य।

2. समकालीन अध्ययन

अ. समाज में शिक्षक और अध्येता

समाज में शिक्षक और अध्येता में भारतीय समाज के अनुसार यहां पर पहचान, जाति, समानता, गरीबी आदि मुद्दों को रखना है। समाज और मानवता के संबंध को वर्गखंड में समझना। भारतीय समाज के प्रमुख मुद्दे, जाति, संस्कृति, समाज, लोकशाही, समानता आदि का समावेश।

ब. जाति, स्कूल और समाज

शिक्षा के संदर्भ में जाति का विकास एवं मुख्यतः पाठ्यक्रम के अंतर्गत शिक्षक की क्षमता के अनुसार जीवन और थियरी को जोड़ने का प्रयास करेगा। शिक्षक पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक में जाति के आधार पर विश्लेषण करना, स्कूल वातावरण का विश्लेषणात्मक समीक्षा, शिक्षा की समीक्षा।

इस तरह इस पाठ्यक्रम का केन्द्र बिंदु मुख्यतः जाति का विकास, इसके आधार पर बच्चे एवं किशोरों को समझना, समाज, संस्कृति समानता को भी समझना मुख्य उद्देश्य है।

3. शैक्षिक अभ्यास

अ. शिक्षा का लक्ष्य, ज्ञान और मूल्य

शिक्षा का अर्थ, पाठ्यक्रम, अधिगम, शिक्षण, स्कूल की जरुरत, मूल्य, ज्ञान, शांति के लिये शिक्षा, शिक्षण चिंतकों जैसे गांधीजी, टागोर, जॉन डीवी, कृष्णामूर्ति, मोन्टेसरी आदि के दर्शनशास्त्र एवं सामाजिक, ऐतिहासिक समीक्षा।

ब. शिक्षक में आत्म और आकांक्षाओं का विकास

शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान आभ्यासिक मुद्दे की स्व पहचान, मानवीय संबंध, किशोर एवं बच्चों के बीच का समय मान्यता एवं अभिरुची की जरूरतों पर प्रकाश डालना। जीवन का ध्येय आदि के विकास को यहां पर निर्देश किया गया है।

1.1.2 पाठ्यक्रम और शिक्षा शास्त्र

1. पाठ्यक्रम अभ्यास

सामान्य बोलचाल की भाषा में, विद्यालयों में विद्यार्थियों को शिक्षित करने हेतु जो कुछ किया जाता है, उसे पाठ्यक्रम के नाम से भी जाना जाता है। विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों ने पाठ्यक्रम को कुछ निश्चित शब्दों में बांधने अथवा परिभाषित करने का प्रयास भी किया है, किंतु पाठ्यक्रम के विस्तार क्षेत्र की सीमाऐं सुनिश्चित कर पाना अत्यंत कठिन कार्य है। फिर भी कतिपय मानवीय, शैक्षिक एवं सामाजिक प्रवृत्तियों के आधार पर पाठ्यक्रम के विस्तार क्षेत्र की सीमाओं को चिन्हांकित करने का प्रयास किया गया है। यदि हम पाठ्यक्रम के इतिहास पर एक दृष्टि डालें तो स्पष्ट रूप से पता चलता है कि पाठ्यक्रम के अंतर्गत सम्मिलित किये जाने वाले ज्ञान का स्वरूप एवं विस्तार अनिवार्य रूप से संबंधित समाज द्वारा मान्य शैक्षिक उद्देश्यों पर निर्भर करता है। इसलिये देश और काल की भिन्नता के अनुसार वहाँ के पाठ्यक्रमों में भिन्नता भी पायी जाती है।

मानव विकास के साथ ही ज्ञान का विकास आरंभ हुआ। मानव के अनुभव हो गये और जीवन में जो परिवर्तन हुए उन्हें नई पीढ़ी को देते रहे और उनसे अवगत कराते रहे। अतः इस तरह

ज्ञान के संदर्भ में पाठ्यक्रम मानव अनुभवों, दर्शनशास्त्र और ज्ञानमीमांसा पर एन.सी.टी.ई. नें भार दिया है।

भाषा के अंतर्गत भाषा को पढ़ाने के लिये बहुत सारे क्रीड़ा–विधि को प्रयोग में लाया जा सकता है। अतः भाषा का पाठ्यक्रम क्रीड़ा के आधार पर होना चाहिये। अनेक प्रकार के तस्वीरों के खेलों द्वारा हम उनेक शब्दकोष की वृद्धि कर सकते हैं। बालकों की पत्रिकाएँ, लिखने, लेख लिखने के लिये, कहानियाँ लिखने के लिये, अभिनय आदि का अवसर मिलने वाला पाठ्यक्रम। वादविवाद प्रतियोगिताऐं, भाषण के लिये अवसर दिये जायें। भाषा द्वारा अपनी आत्माभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। अतः यह सभी क्रियायें भाषा के शिक्षण में बहुत महत्व रखती हैं।

2. शिक्षाशास्त्र का अभ्यास

शिक्षाशास्त्र के मुख्य दो पक्ष हैं – (1) शिक्षण तथा (2) अधिगम। शिक्षणशास्त्र में यह दोनों प्रक्रियाऐं साथ–साथ चलती हैं। शिक्षक शिक्षण करता है और छात्र सीखते हैं। शिक्षक तथा छात्रों का शिक्षण प्रक्रिया में अनेक प्रकार का योगदान होता है। प्रत्येक सोपान, महत्वपूर्ण होता है। इसे शिक्षाशास्त्र का 'प्रक्रिया प्रतिमान' कहते हैं। प्रत्येक शिक्षक के सोपान में छात्र उसके अनुरूप क्रिया करता है। शिक्षण के प्रत्येक कार्य में दोनों का ही योगदान होता है। यह कार्य व क्रियायें शिक्षण में अनायास भी होती हैं, जिनको शिक्षक ने सोचा भी नहीं था और न कोई ऐसी अपेक्षा की थी।

शिक्षक के कार्यों की उपलब्धि छात्रों के अधिगम (ज्ञान तथा कौशल) के रूप में होती है। अधिगम के अनुभव शिक्षक की मध्यस्थता का परिणाम होता है। इस प्रक्रिया के दो पक्ष हैं –

1. मध्यस्थता से शिक्षक छात्र के अनुभवों में अधिक योगदान कर सकता है।
2. मध्यस्थता से छात्र को अधिक ज्ञान प्राप्त होता है।

शिक्षणशास्त्र के अंतर्गत शिक्षण के दो घटकों का उल्लेख किया गया है। प्रथम घटक में शिक्षक की अधिगम के स्वरूप की क्रियाओं का बोध होना। द्वितीय घटक में अधिगम अनुभवों की मध्यस्थता के ज्ञान और कौशल का अभ्यासं हो।

शिक्षाशास्त्रीय ज्ञान के अंतर्गत शिक्षण संबंधित ज्ञान का क्षेत्र ज्ञानात्मक पक्ष से होता है। इसके प्रमुख दो रूप होते हैं – (1) पाठ्यवस्तु का ज्ञान (2) शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों का ज्ञान।

शिक्षणशास्त्रीय पाठ्यवस्तु में निम्नांतिक घटकों को सम्मिलित किया जाता है –

अ. शिक्षण शास्त्रीय पाठ्यवस्तु में

- शिक्षण विधियाँ
- शिक्षण प्रविधियाँ
- शिक्षण सूत्र एवं सहायक सामग्री

ब. शिक्षण–अधिगम का मूल्यांकन

स. शिक्षण व्यवसाय संबंधी ज्ञान

- भूमिकार्ये तथा उत्तरदायित्व
- कार्य तथा कर्तव्य

शिक्षाशास्त्र के ज्ञान तथा अभ्यास के संबंध में जो सिद्धांत उपलब्ध हैं उनका प्रतिपादन विशिष्ट परिस्थितियों में किया गया है क्योंकि उनका अध्ययन क्षेत्र कक्षा-शिक्षण, पाठ्यक्रम विकास तथा विद्यालय प्रबंधन है।

1.1.3 स्कूल इंटर्नशिप

स्कूल इंटर्नशिप में स्कूल में जाकर पाठ देना, पाठ निरीक्षण, वर्गखंड के अंतर्गत एक अनुसंधान। यह इंटर्नशिप एक सप्ताह में 4 दिन रहेगी ओर उसकी समयावधि 6 से 10 सप्ताह तक रहेगी। इस इंटर्नशिप का मुख्य उद्देश्य शिक्षा शिक्षण के दरमियान अपनी योजनाओं को प्रकाश में लाना है।

1.2.0. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में भाषा शिक्षक और शिक्षकों का प्रशिक्षण के प्रति प्रकाश डाला है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के अनुसार भाषा शिक्षक एक कक्षा में जहां विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ के बीच कई तरह के जटिल स्तरों पर संवाद होता है और इस संवाद में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और निभाने की जरूरत भी है। हमारे अनुसार पेशेवर प्रशिक्षित और सामाजिक रूप से संवेदनशील शिक्षकों का कोई विकल्प नहीं हो सकता। केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों की तरफ से शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिये अति गंभीरतापूर्ण योजनाओं पर सोचना व अमल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है ताकि प्रत्येक शिक्षक अपने स्तर पर ही शोध आदि के लिये भी पहल कर सके। हमें इस तरह का ढांचा विकसित करना होगा ताकि कक्षा में शिक्षक भी कुछ पढ़ता है वह शैक्षणिक ज्ञान का सामान्य हिस्सा हो सके।

1.2.1 कक्षा में शिक्षक की भूमिका

भाषा पढ़ाने वाले शिक्षक की भूमिका की महत्ता की गंभीरता इसी बात से जाहिर हो जाती है कि एक तो भाषा पूरी पाठ्यचर्या में विद्यमान होती है और दूसरे भाषाज्ञान, सामाजिक संबंधों को कई स्तरों पर मजबूत करता है, जिसका विशेष महत्व है। हम अपने अंतिम विश्लेषण से यह जानते हैं कि शिक्षक के पास तयशुदा आदेश–प्रपत्र होता है और वह महज प्रतिनिधित्व प्रदान करने वाला अधिकारी है जो अपने की अंतर्विरोधों में डाले बिना अपनी भूमिका पर पुनर्विचार नहीं कर सकता। तथापि, हम इस बात से सहमत और सुविज्ञ हैं कि सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया एक स्तर पर कक्षा में ही शुरू होनी चाहिये।

1.2.2 शिक्षकों का प्रशिक्षण

हमारे देश में शिक्षक–प्रशिक्षण का कार्यक्रम लगभग निराशाजनक स्थिति में है। बी.एड. के पुराने हो चुके एक साल के प्रोग्राम आज के दौर में कक्षाओं में मिलने वाली जटिल चुनौतियों का सामना करने के लिये शिक्षकों को तैयार नहीं कर पाते। इनके विकल्पों जैसे, 'शिक्षाकर्मी' ने तो इस पेशे को और नीचे गिरा दिया। यदि आदिवासी शिक्षा की बात करें तो हम परिस्थिति को और ज्यादा खराब पाते हैं।

कई अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि आदिवासी स्कूलों में 5वीं में भी विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक के किसी भी वाक्य को पढ़ने में असमर्थ होते हैं। अक्षरों की पहचान और शब्द निर्माण में उन्हें कठिनाई होती है। शिक्षकों के लिये विद्यार्थियों की भाषा को जानना महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है ऐसे में विशेष तरीके विकसित करने की जरूरत है, जो घर, पड़ोस व स्कूल की भाषा के बीच पुल का काम कर सकें।

अधिकांशतः कक्षाओं में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच का संवाद एक ही दिशा में होता है जिसमें शिक्षक बोलता है, विद्यार्थी सुनते हैं, विद्यार्थी समझ रहे हैं कि नहीं इससे कोई मतलब नहीं होता। बहुभाषिक और संरचनात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिये जिसकी वकालत हम इस आधार पत्र के माध्यम से कर रहे हैं इसमें यह अनिवार्य करना होगा कि शिक्षक विद्यार्थियों की भाषा से अवगत हों।

कोई उम्मीद कर सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम एक शोध–अध्ययन के अभिकल्प में कुछ मूल तथ्यों पर बल देगा जो नमूने, सामग्री, आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष, विश्लेषण और मात्रात्मक व गुणात्मक आंकड़ों के 'ट्रायंग्यूलेशन' पर ध्यान देगा। कक्षाओं के मामले में बच्चों की केस स्टडी पर विशेष जोर की जरूरत है। इस तरह का प्रशिक्षण सभी विषयों पर लागू होगा।

1.3.0 अध्यापक शिक्षा का प्रशिक्षण

सभी अनुभव करते है कि प्रत्येक संस्था में अध्यापकों की आवश्यकता होती है इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये बी.एड. प्रशिक्षण महाविद्यालयों की स्थापना की जाती है। शिक्षा स्तर को बढ़ाने के लिये अध्यापकों की आवश्यकता के अनुभव की गई, जैसे प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा हेतु अध्यापक को प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रशिक्षण –

प्रशिक्षण वह सम्प्रेषण व्यवहार है। जिसमें आचरण तथा व्यवहार में परिवर्तन पर अधिक बल दिया जाता हैं तथ ा उसके लिये प्रयास और अभयास को अधिक महत्व दिया जाता है। प्रशिक्षण में श्रृंखला तथा

संकेतात्मक अधिगम को अधिक महत्व दिया जाता है जो क्रमशः अनुबंधन की ओर ले जाता है।

कोठारी आयोग (1964–66) ने आरंभ में ही कक्षा शिक्षण के महत्व का उल्लेख किया है "भारत के भाग्य का निर्माण कक्षा में होता है" कक्षा में अहम भूमिका शिक्षक की होती है इसी कक्षा शिक्षण का प्रशिक्षण अध्यापक शिक्षा में किया जाता है यहां शिक्षा का प्रयोग अध्यापक–प्रशिक्षण के लिये किया जाता है। अध्यापक शिक्षा में छात्र–शिक्षण अथवा प्रयोगात्मक–शिक्षण का आयोजन किया जाता है। इस छात्र–शिक्षण की कुशलता पाठ्यवस्तु प्रस्तुतीकरण की क्षमता, कक्षा में ऐसा वातावरण, उत्पन्न करें जो छात्रों के सीखने में सुगम हो आदि क्षमताओं का विकास किया जाता है। अध्यापक शिक्षा का मुख्य उत्तरदायित्व एवं उद्देश्य छात्राध्यापकों में शिक्षण की कुशलताओं का विकास करना है।

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता अथवा स्तर का विकास तभी संभव हो सकता है। जब कक्षा से बाहर न रहकर कक्षा में प्रवेश करके चिंतन करे कि किस प्रकार शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

1.4.0 अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम

भारत के अध्यापक शिक्षा के विभिन्न संस्थाओं के लिये बी.एड. पाठ्यक्रमों का प्रारूप अलग–अलग होता है। जिसमें शिक्षा के सिद्धांत, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा की समस्याऐं, शिक्षण विधियां, प्रविधियां, शिक्षण तकनीकी तथा विषयों से संबंधित शिक्षण विधियों को सम्मिलित किया गया है। बी.एड. के पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप बहुत महत्व दिया गया है।

अध्यापक–शिक्षा के पाठ्यक्रम का विकास उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से किया गया है। जिससे छात्राध्यापकों में शिक्षा सिद्धांत, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षण विधियों, प्रविधियों, शिक्षा की समस्याओं, संगठन एवं प्रशासन, विषय संबंधी ज्ञान एवं कौशल के लिये पाठ्यवस्तुओं को सम्मिलित किया जाता है। इसमें शिक्षण प्रविधियों का अभ्यास भी कराया जाता है।

शिक्षा राज्य का विषय होने के कारण सभी राज्य के बी.एड. पाठ्यक्रमों की व्यवस्था अपने–अपने ढंग से करते हैं। यहां तक एक ही राज्य के विश्वविद्यालयों में बी.एड. पाठ्यक्रमों का प्रारूप की अलग–अलग होता है।

इसी तरह एक ही राज्य के भोपाल जिले में बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में बी.एड. का पाठ्यक्रम अलग–अलग है इसलिये शोधकर्ता बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के बी.एड. पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन कर रहा है। जो एन.सी.टी.ई. (National Council for Teacher Education) द्वारा तैयार किया गया।

1.5.0 क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल का गुजराती पाठ्यक्रम*

भाग 1

प्रथम वर्ष

कुल अंक	100	**समयावधि 128 घंटे**
आंतरिक मूल्यांकन	25	
बाह्य मूल्यांकन	75	

---

*परिशिष्ट 'क' का आंशिक हिन्दी अनुवाद

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

- भाषा के स्वरूप और व्यवस्था को समझना।
- भाषा सीखने की सृजनात्मक–रचनात्मक प्रक्रिया को जानना।
- विद्यार्थी, वातावरण, स्कूल, समाज और समझ के बीच के संबंध को जानना।
- शांति के लिये भाषा के प्रयोग को जानना।
- भाषा सीखने की विविध उपाय एवं प्रक्रिया को जानना।
- पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण कर बच्चों की समझ के अनुसार ढालना।
- भाषा और साहित्य के संबंध को जानना।
- गुजराती भाषा के विविध रूपों और अभिव्यक्तियों को जानना।
- भावों और विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति करना।
- भाषाकीय बावत् से संवेदनशील होना।
- अनुवाद का महत्व और भूमिका को जानना।
- विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता को पहचानना।

इकाई एक

भाषा का स्वरूप / संकल्पना

- बच्चों की भाषा
- समझ और भाषा का संबंध
- भाषा और समाज का संबंध
- स्कूल और घर की भाषा
- शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध की भाषा
- स्कूल का भाषाई वातावरण

इकाई दो

भाषा शिक्षण 1

- पढ़ाई का सृजनात्मक नजरिया
- भाषा की रचना
    - बोलना और लिखना
    - सुनना और पढ़ना
    - बहुभाषिकता
    - संदर्भ में व्याकरण

इकाई तीन

गुजराती भाषा के विविध रूप

- साहित्य
- मीडिया
- अनुवाद

विद्यार्थी को कविता, नाटक, कहानी का परिचय, समीक्षात्मक रिपोर्टिंग, अहेवाल, गुजराती अनुवाद का परिचय होना चाहिये।

इकाई चार

गुजराती भाषाभिव्यक्ति के रूप, कविता, वार्ता, नाटक, अन्य रूप।

इकाई पांच

भाषा शिक्षण की पद्धतियां

पाठ आयोजन   गद्य, पद्य

मूल्यांकन

भाग 2

द्वितीय वर्ष

कुल अंक	100	समयावधि 96 घंटे
आंतरिक मूल्यांकन	25	
बाह्य मूल्यांकन	75	

इकाई छः

भाषा शिक्षण 2

शिक्षण का सृजनात्मक नजरिया

1. रचना को जानना

- एक रचना – अनेक स्तर
  (अलग–अलग कक्षाओं में एक ही रचना को पढ़ना)
- एक रचना – अनेक अर्थ
  (अलग–अलग नजरिये की कृति)
- एक रचना विभिन्न बच्चे

2. भाषा का अन्य विषयों से जुड़ाव

- समझ की भाषा और सामाजिक विज्ञान
- भाषा शिक्षण के दौरान अन्य विषय को सीखने के लिये भाषा के उपयोग के बारे में बताना।
- महत्व तथा विधि

इकाई सात

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एक तथा पाठ्यपुस्तकें अनेक

- तीनों का संबंध

- पाठ्यक्रम को बच्चे के वातावरण के अनुसार बनाना
- भाषा शिक्षण के संदर्भ में आए परिवेश के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करना।

इकाई आठ

पाठ्यक्रम सिद्ध करने के संसाधन

- क्षेत्रों में उपस्थिति लोककथा, लोकगीतों का समूह में बंटकर संकलन तैयार करना।
- कक्षा 6 से 12 तक की गुजराती की पाठ्यपुस्तकों में किसी एक रचना चुनकर परिवेश से जोड़ते हुए उसके शिक्षण बिंदु तैयार करना।
- विद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक गतिविधियों को गुजराती की कक्षा से जोड़ना।
- आसपास की गतिविधियों को गुजराती कक्षा से जोड़ना।

इकाई नौ

भाषा की कक्षा और मूल्यांकन

- कक्षा में और कक्षा से बाहर सतत् मूल्यांकन करना।
- मूल्यांकन में सृजनात्मक रवैया।
- आंकलन संबंधी सूचनाओं का इस्तेमाल।
- विद्यार्थी की प्रगति में माता–पिता की सहभागिता
- एक दूसरे का मूल्यांकन
- फीडबैक और रिपोर्ट देना
- प्रश्नों का स्वरूप तय करना।

इकाई दस

प्रयोग पर आधारित परियोजना कार्य से कार्य करने का व्यवहारिक अनुभव प्राप्त होगा।

- विभिन्न प्रयोगों की आलोचनात्मक दृष्टि से देखने का नजरिया

1.6.0 हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन का गुजराती पाठ्यक्रम*

उद्देश्य :

- माध्यमिक कक्षा के गुजराती पाठ्यपुस्तक में समाष्ठि व्याकरण को जानना।
- गुजराती साहित्य के भिन्न-भिन्न साहित्य स्वरूपों को जानना।
- सृजनात्मक प्रक्रिया को जानना।
- साहित्य समंकों के बारे में जानना।
- कक्षा 10 के गुजराती पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट सृजनकारों के बारे में जानना।
- गुजराती भाषा सीखने के समय, शैक्षणिक सामग्री, संदर्भ साहित्य, ज्ञानकोष के बारे में जानना।
- मातृभाषा का महत्व एवं विस्तार को जानना।
- गुजराती विषय के पद्धतियों, पाठ योजनाओं के बारे में जानना।
- गद्य, पद्य रचना और व्याकरण का पाठ-योजना में आत्मीकरण के बारे में जानना।

इकाई एक

कक्षा 8 से 10 के गुजराती विषय के पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट सैद्धांतिक व्याकरण और हेतुलक्षी प्रश्नों।

---

*परिशिष्ट 'ख' का हिन्दी अनुवाद

मुद्दे :

संधि, समास, वाक्य विश्लेषण, वाक्य परिवर्तन, संज्ञा, विश्लेषण, सर्वनाम, छंद, क्रियाविशेषण, कृदंत, अलंकार आदि।

इकाई दो

कक्षा 10 के गुजराती पाठ्यपुस्तक में से निम्नांकित कृतियां :

अ. कृति

	पद्य कृति	कवि के नाम
1.	भक्ति पदारथ	नरसिंह मेहता
2.	अदीठो संगाथ	मकरंद व. दवे
3.	अतिज्ञान	मणिशंकर भट्ट 'कान्त'

	गद्य कृति	लेखक के नाम
1.	चक्षुःश्रवा	चन्द्रकान्त बक्षी
2.	पृथ्वी वल्लभ	क.मा. मुनशी

ब. पद्धति

- स्कूल के पाठ्यक्रम में मातृभाषा का स्थान एवं महत्व।
- भाषा विकास के परिबल और असर।
- भाषा का स्वरूप और भाषा पढ़ाने की प्रक्रिया।
- भाषा शिक्षण के हेतु और विशिष्ट हेतु।

इकाई तीन

- भाषा कौशल – सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना।
- कौशल प्राप्त करने की युक्तियाँ और शिक्षक की प्रयोग करने की विविध पद्धतियाँ।
- बाह्य योजना, इकाई योजना।

- गद्य, पद्य, व्याकरण शिक्षण के लिये योजना।
- वर्गखंड के लिये भाषा शिक्षक की सज्जता।
- मातृभाषा शिक्षक की शैक्षणिक एवं व्यावसायिक योग्यता।

इकाई चार

कक्षा 10 की गुजराती पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट कृतियों का अभ्यास।

	पद्य कृति	कवि के नाम
1.	झगडो लोचन मननो	दयाराम
2.	जुनुं पियरधर	ब.क. ठाकोर

	गद्य कृति	लेखक के नाम
1.	सोनानां वृक्षो	मणीलाल ह. पटेल
2.	ए.पी.जे. अब्दुल कलाम नु घडतर	ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
3.	वृक्ष	लाभशंकर ठाकर

इकाई पांच

साहित्य स्वरूपों का परिचय

अ. पद, उर्मिकाव्य, खण्ड काव्य, गरबी, सोनेट, ललित निबंध, आत्मकथा खंड, एकांकी, नवलिका, नवलकथा खंड।

ब. पाठ योजना में निम्न पद्धतियों का प्रयोग
स्वाध्याय, परिसंवाद, समूह चर्चा, निरीक्षण पद्धति।

- मातृभाषा के शिक्षण में अनुकार्य का महत्तव।
- आदर्श पाठ्यपुस्तक के लक्षण एवं मूल्यांकन

(कक्षा 8 से 10 की गुजराती पाठ्यपुस्तक)

इकाई छः

- व्याकरण का शिक्षण और पद्धतियां
- काव्य शिक्षण की विशिष्टताऐं।
- काव्य शिक्षक की विशिष्टताऐं।
- शैक्षणिक सामग्री की पसंदगी एवं प्रयोग।
- दृश्य–श्रव्य साधनों का प्रयोग।
- मातृभाषा प्रश्नपत्र की रचना।

इकाई सात

प्रायोगिक कार्य

1. काव्य समीक्षा
2. सार लेखन
3. विचार विस्तार
4. निबंध लेखन
5. अहेवाल लेखन
6. पत्र लेखन
7. आवेदन पत्र।

1.7.0 अध्ययन की आवश्यकता

विद्यालय में शैक्षणिक गुणवत्ता को बढ़ाने के लिये बी.एड. प्रशिक्षण की कई संस्थाएँ खोली हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में बी.एड. दो वर्ष का होता है। हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय में बी.एड. एक वर्ष का होता है। दोनों में एक साल का अंतर है। एन.सी.ई.आर.टी. ने 2004 मे महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की एक साल की बी.एड. पाठ्यक्रम और आर.आई.ई. के दो वर्ष के बी. एड. पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन किया था। जिसमें आर.आई. ई. के दो वर्ष के बी.एड. प्रभावशालीन है ऐसा परिणाम आया था। इसलिये क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल और हेमचंद्राचार्य उत्तर

गुजरात विश्वविद्यालय के बी.एड. पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है।

D- 343

1.8.0 समस्या कथन

वर्तमान शोध समस्या को निम्न रूप से प्रस्तुत किया जाता है –

"क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल एवं हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के बी.एड. पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन"

1.9.0 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के बारे में बेन्ट और क्रेनेन बेन्ट ने निम्नानुसार व्याख्या की है –

"पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु का सुव्यवस्थित रूप है, जो बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तैयार किया जाता है।"

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

यह एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित चार महाविद्यालय के अंतर्गत एक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल में स्थापित है।

हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय

गुजरात राज्य के पाटन में यह विश्वविद्यालय स्थापित है। जो हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय से जानी जाती है।

1.10.0 उद्देश्य

- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल एवं हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के गुजराती पाठ्यक्रम के सामान्य मुद्दों का तुलनात्मक अध्ययन

- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल एवं हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के गुजराती पाठ्यक्रम के विषय वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल एवं हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के गुजराती पाठ्यक्रम के मूल्यांकन का तुलनात्मक अध्ययन
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल एवं हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के गुजराती पाठ्यक्रम के पाठ्योजना, सूक्ष्म शिक्षण, समय, पद्धति एवं इन्टर्नशिप का तुलनात्मक अध्ययन

1.11.0 शोध की परिसीमाऐं

- प्रस्तुत अध्ययन केवल बी.एड. के गुजराती पाठ्यक्रम तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के महेसाणा, विसनगर, भाण्डु, बेचराजी, पाटन के विशेषज्ञ, सहायक अध्यापक एवं प्रवक्ता तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के गुजराती विषय के सहायक अध्यापक एवं एम.एड. विद्यार्थियों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल 27 हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन एवं 5 क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के विशेषज्ञ, सहायक अध्यापक, प्रवक्ता और एम.एड. विद्यार्थियों तक ही सीमित है।